आपातकाल में सृजन फुलवारी

इन्द्राणी साहू 'साँची'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

इन्द्राणी साहू 'साँची'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-160-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 इन्द्राणी साहू 'साँची'

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY INDRANI SAHU "SANCHUI"

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की

आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	कोरोना जागरूकता	6
2.	एक कोप कोरोना	7
3.	नवरात्रि	8
4.	नैतिक दोहे	9
5.	तालाबंदी	10
6.	भक्ति	11
7.	युद्ध	12
8.	छत्तीसगढ़ी गीत	13
9.	कोरोना से जीत	14
10.	कोरोना दोहा गीत	15
11.	कोरोना वायरस	16
12.	कोरोना एक महामारी	17
13.	रोग दूर करना है	18
14.	विपद्रव	19
15.	सृष्टि का विस्तार	20
16.	कठिन डगर	21

कोरोना जागरूकता

मचा हुआ है जिसका रोना।
एक वायरस है कोरोना।
है विदेश से जन्मी आई।
सारी दुनिया पर अब छाई।।

सर्दी खाँसी ज्वर चढ़ जाता।
लक्षण इसका यही बताता।
पाचन तंत्र करे दुखदाई।
स्वाँस नली पर रोक लगाई।

सुरसा जैसी मुँह फैलाए।
प्रतिपल ही यह बढ़ती जाए।
घातक है यह बड़ी बिमारी।
दिखे रूप एक महामारी।।

इस पर रोक लगाना होगा।
जागरूकता लाना होगा।
नहीं संक्रमण बढ़ने देना।
स्वयं सुरक्षा का प्रण लेना।।

बार बार हाथों को धोना।
भीड़ भाड़ में तुम मत खोना।।
सेनेटाइजर सभी लगाना।
कोरोना को दूर भगाना।।

आस पास की रखो सफाई।
रोग दूर हो जाए भाई।
मांसाहारी भोजन छोड़ो।
हरी सब्जियों से मन जोड़ो।।

उत्सव मेले में मत जाना।
घर में रहकर काम चलाना।
जनता कर्फ्यू को अपनाना।
इस वायरस से मुक्ति पाना।।

एक कोप कोरोना

तांडव करती क्रूर व्याधि ये, लगती कुनैन की गोली।
शत्रु बनी आतंकित करती, मत समझो इसे ठिठोली।।

धरती अम्बर रुष्ट हुए हैं, विपदा शीश मंडराती।
मानव कृत्यों का प्रतिफल यह, नैसर्गिक संकट लाती।
एक कोप कोरोना बनकर, खेल रहा है आँख मिचौली।
शत्रु बनी आतंकित करती, समझ नहीं हँसी ठिठोली।।

आतंकित जनजीवन कैसे, झंझावातों से निपटे।
कुपित प्रकृति के समक्ष अब, मानव बुद्धि लगी सिमटे।
घूँघट बदली का है पतला, यही सूर्य से धरती बोली।
शत्रु बनी आतंकित करती, समझ नहीं हँसी ठिठोली।।

हर विनाश के गर्भ छुपा तो, निश्चय एक सृजन होता।
हाथ थाम कर कदम बढ़ाना, शीश पकड़ कर क्यों रोता।
कर्म मनुज का हमें बताने, आँख नियति ने अब खोली।
शत्रु बनी आतंकित करती, समझ नहीं हँसी ठिठोली।।

नवरात्रि

चैत्र मास नवरात्रि में, सजा मात दरबार।
अष्टभुजी माँ आ गई, हरने भू का भार।1।

माता आई द्वार है, कर सोलह श्रृंगार।
निर्मल मन से कीजिए, प्रेम पूर्ण सत्कार।2।

लाल चुनरिया ओढ़ के, आई सिंह सवार।
शक्ति स्वरूपा मात की, महिमा अपरंपार।3।

मातृ रूप में अम्बिका, खूब लुटाती प्यार।
शक्ति रूप संधान कर, करे दनुज संहार।4।

सात्विक बुद्धि विचार रख, छोड़ तामसिक भोज।
पावनता को धार कर, ध्याओ माता रोज।5।

यज्ञ हवन पूजन करें, घर में जले कपूर।
कोरोना क्या चीज है, रोग रहे सब दूर।6।

देती देवी रूप में, नारी को सम्मान।
नारी पूजित है जहाँ, वह घर स्वर्ग समान।7।

निर्मलता तन मन रहे, स्वच्छ रहे परिवेश।
देती है नवरात्रि तो, यह पावन संदेश।8।

नैतिक दोहे

1- नवरात्रि

आई माँ नवरात्रि में, बढ़ा रही है हाथ।
कोरोना से युद्ध में, देने सबका साथ।।

2- शुचिता

निर्मल शुचिता साधना, पूजन का आधार।
माता के आशीष से, उपकृत यह संसार।।

3- आराधना

ईश्वर की आराधना, करिए श्रद्धा भक्ति।
उनके श्रेष्ठ प्रताप से, मिलती मन को शक्ति।।

4- संकल्प

अपनाएँगे स्वच्छता, करिए दृढ संकल्प।
है बचाव यह रोग का, दूजा नहीं विकल्प।।

5- संदेश

अब के यह नवरात्रि तो, लाई है संदेश।
घर आँगन तन मन सभी, स्वच्छ रखें परिवेश।।

6- प्रकोप

बढ़ता हुआ प्रकोप है, कोरोना का रोज।
रोकथाम की युक्ति का, मिलकर करिए खोज।।

7- सत्कर्म

मानव का सत्कर्म ही, बने मोक्ष आधार।
निर्मल बुद्धि विवेक से, संचालित संसार।।

8- चेतना

दिव्य चेतना जागती, जब मिलता सद्ज्ञान।
सद्गुरु के सत्संग से, बनता मनुज महान।।

9- निष्ठा

पूरी निष्ठा से करें, तभी सिद्ध हो काम।
होती मन में शांति तब, मिलता है आराम।।

10- दरबार

चैत्र मास नवरात्रि में, सजा मात दरबार।
अष्टभुजी माँ आ गई, हरने भू का भार।।

तालाबंदी

कोरोना का वायरस, फैल रहा विश्व पर,
घातक बीमारी बड़ी, दुनिया में छा गई।
मनुज की शत्रु बनी, दानवी सी रूप धरी,
जन्मी विदेश में यह, कहर ही ढा गई।
संक्रमण हुआ भारी, बन गई महामारी,
क्रूर बड़ी व्याधि यह, सैकड़ों को खा गई।
तालाबंदी अब कर, रहो सब घर पर,
कोरोना से लड़ने की, घड़ी अब आ गई।1।

बार बार हाथ धोना, साफ रखो हर कोना,
मांसाहार छोड़कर, शाकाहार खाइए।
घर से तो जाना नहीं, संसर्ग में आना नहीं,
एक दूसरे से थोड़ी, दूरी तो बनाइए।
तालाबंदी यह कहे, घर में ही सब रहें,
संक्रमण फैले नहीं, सबको बताइए।
सुरक्षा ही रोकथाम, धीरज से बने काम,
कोरोना से लड़ाई में, साथ तो निभाइए।2।

जानकारी दीजे सही, अनर्गल बात नहीं,
गलत संदेश दे के, भ्रम न फैलाइए।
सेवा भाव मन धरें, पीड़ितों की सेवा करें,
मानवता तालाबंदी, कभी न लगाइए।
जागरूक बनकर, बीमारी समझ कर,
उपचार कर सही, रोग को भगाइए।
घर से निकल नहीं, देशभक्ति अब यही,
नियम न तोड़ो कोई, बात समझाइए।3।

भक्ति

नवरात्रि बड़ी पावन आई, संग हजारों खुशियाँ लाई।
शक्ति साधना बेला अनुपम, भक्ति भाव भर लो निज जीवन।।

अष्टभुजी माँ रूप बनाई, सिंह सवारी करके आई।
अस्त्र शस्त्र को धारण करती, भक्तों का सब संकट हरती।।

कर सोलह श्रृंगार भवानी, लाल चुनरिया ओढ़ सुहानी।
मुख मंडल आलौकिक आभा, भक्त हृदय की बनती शोभा।।

जब जब भू पर संकट आता, तब तब आती है जग माता।
कष्ट हरण माता उपकारी, शक्ति भक्ति संगम अति प्यारी।।

फिर से संकट भू पर आया, कोरोना ने शोर मचाया।
यह संकट भी माँ हर लेगी, रोग मुक्त धरती कर देगी।।

सच्चे मन से कर आराधन, तन मन जीवन करके पावन।
अस्वच्छता न माँ को भाए, साफ सफाई सब अपनाएँ।।

भोज्य तामसिक तुम मत खाना, सात्विक भोजन ही अपनाना।
तन मन घर की करो सफाई, माता यह सन्देशा लाई।।

धूप कपूर सुहावन लागे, रोग व्याधियाँ घर से भागे।
तुम भी घर महकाते जाना, कोरोना को मार भगाना।।

नवदिन साधन घर पर करना, भक्ति भावना को उर भरना।
पवित्रता को ही अपनाना, ऐसा यह नवरात्र मनाना।।

युद्ध

सब मिलजुल कर जीतिए, कोरोना से युद्ध।
घर में ही रक्षित रहें, खान पान रख शुद्ध।।

युद्ध क्षेत्र है जिंदगी, लोभ द्वेष अरि जान।
कर प्रहार सद्बुद्धि का, तोड़ो इनका मान।।

नीर क्षीर पहचान का, जागृत करो विवेक।
जीवन के हर युद्ध को, कर्म जीतता नेक।।

सत्य झूठ के युद्ध में, सच की होती जीत।
सच्चाई छुपती नहीं, अटल सत्य यह रीत।।

अपनों से मत युद्ध कर, होते ये अनमोल।
इनको जीतो प्रेम से, वाणी में रस घोल।।

मन बैठा जो शत्रु है, करिए उससे युद्ध।
कलुषित भावों को हरा, बनिए आप प्रबुद्ध।।

प्रेम घृणा के युद्ध में, सदा घृणा की हार।
संचालित है प्रेम से, यह सुंदर संसार।।

छत्तीसगढ़ी गीत

ये विदेश ले आये बीमारी, अड़बड़ नाच नचावत हे।
डॉक्टर अउ बीमार दुनो ल, रात दिन डरवावत हे।।

आवव दीदी आवव भैया, जन जन के पुकार सुनव।
कोरोना ल मार भगावव, जुरमिल सब उपचार करव।
दुनिया में कोहराम मचाके, सब ल आँखी देखावत हे।
डॉक्टर अउ बीमार दुनो ल, रात दिन डरवावत हे।।

शासन के गोहार सुनव जी, घर ले कोनो झन निकलव।
सेनेटाइजर मास्क लगावव, घेरी बेरी हाथ धोवव।
संक्रमण ले बच के राहव, सब झन ल समझावत हे।
डॉक्टर अउ बीमार दुनो ल, रात दिन डरवावत हे।।

माँस मदिरा सेवन छोडव, सात्विक भोजन अपनावव।
भीड़ भाड़ ले दुरिहा रहिके, परिवार में समय बितावव।
अपन सुरक्षा खुद कर लेवव, दुनिया ह गोहरावत हे।
डॉक्टर अउ बीमार दुनो ल, रात दिन डरवावत हे।।

ये जीवन अनमोल अबड़ हे, मत खेलवाड़ करव संगी।
अगर बीमारी हो गए हावय, चल उपचार करव संगी।
लुका छुपा के अब झन राखव, जिनगी तोला पुकारत हे।
डॉक्टर अउ बीमार दुनो ल, रात दिन डरवावत हे।।

कोरोना से जीत

कोरोना से जंग को,
देश हुआ तैयार।
जनता कर्फ्यू से किया,
उस पर पहला वार।।

बढ़ता है संसर्ग से,
रहो भीड़ से दूर।
जिद्दी इसका वायरस,
इसमें बल भरपूर।।

हल्के में मत लीजिए,
यह तो खतरा जाल।
है अमूल्य यह जिंदगी,
रखिए इसे सँभाल।।

लापरवाही मत करें,
स्वच्छ करें हर काम।
मिलजुल कर सब जीतिए,
कोरोना संग्राम।।

बात छुपाने की नहीं,
रोग अगर लग जाय।
उचित रोग उपचार से,
जीवन रखो बचाय।।

कोरोना दोहागीत

कोरोना से मच गया, चहुँ दिशि हाहाकार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।

एक महामारी बनी, कोरोना यह आज।
लोग सभी भयभीत हैं, हुआ प्रभावित काज।
इस दानव से है डरा, सिमट गया संसार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।
जिद्दी इसका वायरस, शीघ्र नहीं हो नष्ट।
तीव्र संक्रमित ये करे, देता भारी कष्ट।
करे प्रभावित साँस को, काटे उसके तार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।

कोरोना का मच गया, रोना चारो ओर।
कोशिश करना छोड़कर, व्यर्थ मचाते शोर।
देखा देखी छोड़कर, बदल स्वयं आचार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।
अपनाओ सब स्वच्छता, शाकाहारी भोग।
कोरोना क्या चीज है, लगे न कोई रोग।
अपनी रक्षा खुद करो, जीवन चलो सँवार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।

छींको जरा सँभाल कर, मुख में रखो रुमाल।
साफ सफाई ही बने, कोरोना का काल।
सर्दी खाँसी ज्वर लगे, घबराना मत यार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।
सामूहिक परिवेश से, रहिए थोड़ा दूर।
करे वहीं पर आक्रमण, कोरोना यह क्रूर।
रुग्णालय में जा तुरत, शुरू करो उपचार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।

धोते रहिए हाथ जी, मास्क रखो मुख नाक।
भोजन छोड़ो तामसिक, बने रसोई पाक।
सात्विक भोजन स्वच्छता, सतर्कता उपचार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।
नकल विदेशी मत करो, छोड़ो भक्षण माँस।
यह स्वभाव ही तामसिक, बनी गले की फाँस।
कोरोना का अंत कर, हरो धरा का भार।
डटकर करें मुकाबला, इसे भगाएँ मार।।

कोरोना वायरस

एक महामारी बनी, कोरोना यह आज।
लोग सभी भयभीत हैं, हुआ प्रभावित काज।।

जिद्दी इसका वायरस, शीघ्र नहीं हो नष्ट।
तीव्र संक्रमित ये करे, देता भारी कष्ट।।

कोरोना का मच गया, रोना चारो ओर।
कोशिश करना छोड़कर, व्यर्थ मचाते शोर।।

अपनाओ सब स्वच्छता, शाकाहारी भोग।
कोरोना क्या चीज है, लगे न कोई रोग।।

सर्दी खाँसी ज्वर लगे, घबराना मत यार।
रुग्णालय में जा तुरत, शुरू करो उपचार।।

छींको जरा सँभाल कर, मुख में रखो रुमाल।
साफ सफाई ही बने, कोरोना का काल।।

धोते रहिए हाथ जी, मास्क रखो मुख नाक।
भोजन छोड़ो तामसिक, बने रसोई पाक।।

सामूहिक परिवेश से, रहिए थोड़ा दूर।
करे वहीं पर आक्रमण, कोरोना यह क्रूर।।

नकल विदेशी मत करो, छोड़ो भक्षण माँस।
यह स्वभाव ही तामसिक, बनी गले की फाँस।।

सात्विक भोजन स्वच्छता, सतर्कता उपचार।
कोरोना का अंत कर, हरो धरा का भार।।

कोरोना एक महामारी

एक महामारी बनी, कोरोना यह आज।
लोग सभी भयभीत हैं, हुआ प्रभावित काज।।

जिद्दी इसका वायरस, शीघ्र नहीं हो नष्ट।
तीव्र संक्रमित ये करे, देता भारी कष्ट।।

कोरोना का मच गया, रोना चारो ओर।
कोशिश करना छोड़कर, व्यर्थ मचाते शोर।।

अपनाओ सब स्वच्छता, शाकाहारी भोग।
कोरोना क्या चीज है, लगे न कोई रोग।।

सर्दी खाँसी ज्वर लगे, घबराना मत यार।
रुग्णालय में जा तुरत, शुरू करो उपचार।।

छींको जरा सँभाल कर, मुख में रखो रुमाल।
साफ सफाई ही बने, कोरोना का काल।।

धोते रहिए हाथ जी, मास्क रखो मुख नाक।
भोजन छोड़ो तामसिक, बने रसोई पाक।।

रोग दूर करना है

कोरोना का दम्भ, दूर करना है निश्चय।
करो सामना खूब,रोग मत समझो अक्षय।
इसका यही उपाय, सफाई सब अपनाओ।
करो धुलाई हाथ, स्वच्छ भोजन ही खाओ।।

इनसे रहना दूर, छींक ज्वर सर्दी खाँसी।
रखो स्वास्थ्य का ध्यान,भोज्य खाओ मत बासी।
करिए शाकाहार, माँस मत हाथ लगाना।
उबला पीना नीर, सावधानी अपनाना।।

रहो भीड़ से दूर, पार्टियों को बिसराना।
खुला रखा जो भोज्य,कभी मत उसको खाना।
साफ रखो घर द्वार, वायरस फैल न पाएँ।
स्वच्छ देश अभियान,चलो मिल सभी चलाएँ।।

कोई दिखे मरीज, चिकित्सालय ले जाना।
इसका करो बचाव, नहीं इससे घबराना।।
जागरूक हों लोग, रुकेगी यह बीमारी।
हो कैसा भी विध्न, मनुज से सब ही हारी।।

विपद्रव

एक विपद्रव मचा हुआ है, व्याकुल दुनिया है सारी।
बुद्धि शक्ति भी आज मनुज की, हुई बड़ी है बेचारी।।

अपने ही कर्मों के फल से,
मानव ने यह दिन पाया।
हाहाकार मचा अब ऐसा,
बादल संकट का छाया।
मानवीय भूलों का प्रतिफल,
पड़ा प्रकृति पर भी भारी।
एक विपद्रव मचा हुआ है, व्याकुल दुनिया है सारी।

सुरसा जैसी मुँह फैलाए,
रूप भयानक दिखलाती।
आज विश्व को निगल रही है,
नहीं किसी के वश आती।
रक्तिम तांडव मचा रही है,
बनी हुई तीक्ष्ण कटारी।
एक विपद्रव मचा हुआ है, व्याकुल दुनिया है सारी।।

आओ अब संकल्प उठाओ,
मिलकर इससे लड़ना है।
सेवा अरु सहकार भाव से,
नूतन पथ को गढ़ना है।
निज अनुशासन के पालन से,
सदा बुराई है हारी।
एक विपद्रव मचा हुआ है, व्याकुल दुनिया है सारी।।

सृष्टि का विस्तार

लुप्त होगी जब निशा तब, भोर आ सके सिंदूरी।
नव सृजन से हो सकेगी, पूर्ण जगती यह अधूरी।।

जीर्ण ढहती है इमारत
नव सदन तब रूप पाता।
रिक्त पन्नों में सृजक का
भाव चित्रित रंग लाता।
साधना होती सफल जब, पुष्ट हो श्रद्धा सबूरी।
नव सृजन से हो सकेगी, पूर्ण जगती यह अधूरी।।

नीर दूषित जिस कलश में
अमी कहाँ से भर पाए।
है सामर्थ्य रिक्त घट में
शुद्ध अमृत जल अपनाए।
वर्जनाएँ जब मिटेगी
सर्जना तब होय पूरी।
नव सृजन से हो सकेगी, पूर्ण जगती यह अधूरी।।

पर्ण त्यागे जब पुरातन
तरु नवल पल्लव सजाता।
रिक्त करती नीर नद तब
पूर्ण करने मेघ आता।।
सृष्टि का विस्तार होगा
रिक्तपन अब फिर जरूरी।
नव सृजन से हो सकेगी, पूर्ण जगती यह अधूरी।।

कठिन डगर

है कठिनजीवन डगर यह, सत्य इतना जान लो।
है मगर चलना जरूरी, कर्म पथ पहचान लो।।

सत्य पथ गंतव्य होवे, निर्जन भले राह हो।
तुष्ट रहना सीख लेवें, सीमित सदा चाह हो।
मत करें हम कार्य खोटा, यह शपथ अब ठान लो।
है कठिन जीवन डगर यह, सत्य इतना जान लो।।1।।

खूब झंझावात में भी, पाँव डिगने दो नही।
कोशिशों से ही बने है, कार्य अपने सब सही।
हो भले असफल मगर तुम, धर्म युत संज्ञान लो।
है कठिन जीवन डगर यह, सत्य इतना जान लो।।2।।

छल प्रपंचों से सदा ही, दूर खुद को राखिए।
दे सके जो शाँति मन को, बोल वह ही भाषिए।
प्रीत से ही जग विजय है, होंठ मधु मुस्कान लो।
है कठिन जीवन डगर यह, सत्य इतना जान लो।।3।।

तोड़ तृष्णा की दिवारें, बस हृदय संतोष हो।
संयमित व्यवहार होवे, दूर मन आक्रोश हो।
भीरुता को त्याग कर अब, शौर्य शर संधान लो।
है कठिन जीवन डगर यह, सत्य इतना जान लो।।4।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

इन्द्राणी साहू 'साँची'

भाटापारा छत्तीसगढ़

सम्माननीय अंतरा शब्द शक्ति का असीम आभार जिन्होंने इस संकट की घड़ी को सार्थक बनाने का सराहनीय प्रयास किया।

कोरोना व्याधि से जारी युद्ध में इस लाकडाउन कि अवधि का सदुपयोग करने के लिए और हमारी लेखन प्रतिभा को निखारने के लिए सृजन का अमूल्य अवसर प्रदान किया।

निश्चय ही आपका यह प्रयास एक प्रकार से आत्म अनुशासन बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुआ है, पुनः आपका कोटिशः आभार।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-160-2

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/